❖

Suri Jayghosh Tattva Sparshna

❖

Rachna: Pu. Sadhviji Shri Punyanidhishriji M. S.

STAVAN STUTI SAJJHAY
S.S.S.

• श्लोक •

करुणायुतमहाभाग, सूर्यकोटी समप्रभः।
सौभाग्यंकुरुमे देव! सर्व कार्येषु सर्वदा॥
पंचभूत समादाय, पंचभूतपवित्रितः।
भूतपञ्चकषंकृत्वा, विसृष्टंपञ्चभूतकं॥
॥ जय जयघोषसूरीश्वरम् ॥

Mahabhoot Pruthvi Tattva

तर्ज: (एक तेरा नाम है साचा)

जिनशासन महाराजा... होऽऽऽ जिनशासन महाराजा,
सूरिराजा पुण्यभाजा, गीतार्थ गुरुमाँ... होऽऽ
ज्ञान के महासागर, सिद्धांत दिवाकर, जयघोष गुरुमाँ...
तेरे चरणों में, मेरा जहान है..(२) मेरे हो प्राण गुरूमाँ...
वदे गुरुवरम्..वदे... वदे गुरुवरम्..वदे...

तर्ज: (झीणा रे..माई तेरी चुनरीया)

कान्तादेवी के राजदुलार, जवाहर तेरी बात है न्यारी..(२)
कथा बचपन की, संयम जीवन की, महाश्रमण की है प्यारी..
प्यारी..प्यारी...
कथा बचपन की, संयम जीवन की, जवाहर तेरी बात है न्यारी,
पिताश्री मफतजी, के आधार, जवाहर तेरी बात है न्यारी,
कान्तादेवी के राजदुलार, जवाहर तेरी बात है न्यारी...

तुझसे दूर नहीं है, जग से दूर है माँ,
कुलको रोशन करोगे, साथ है तेरे गुरुमाँ...
गुरुमाँ..गुरुमाँ...पृथ्वी समी तुं शक्तिधारी,
गुरुमाँ..गुरुमाँ...आशिष तेरे शिवसुखकारी,
तेरे आशिष, मेरी पहचान, जवाहर तेरी बात है न्यारी...

तर्ज: (अपना लोहा माने दुनिया - कुसुंबी रंग)

{सबसे प्यारे, मेरे अपनो पे आया है सितम,
सुख की धरती, आहे भरती, सपने हुए खतम} ..(२)
मरके जीना जीके मरना ना हो ऐसा जनम...
बड़ा कातिल बड़ा जालिम, ये है संसार बड़ा ही बेरहम!
नहीं करना, हो नहीं करना...
{नहीं करना करना, नहीं करना करना...ऐसे संसार का संग,
के मुझे नहीं करना करना, नही करना करना...
स्वार्थी संसार का संग} ..(२)
मृत्यु भी मर जायेगा, कर्म भी डर जायेगा,
गुरु चरणों में है जीवन, मेरा समर्पणम्...
{मुझे सजना सजना अब सजना सजना,
अब सजना वैराग्य का रंग...
के मुझे सजना सजना अब सजना सजना,
अब सजना वैराग्य का रंग...} ..(२)
सजना वैराग्य का...सजना वैराग्य का रंग...

STAVAN STUTI SAJJHAY
S.S.S.

Mahabhoot Jal Tattva

तर्ज: (कहो ने क्यारे मळशो श्याम)

जय हो..जय हो..जय हो..जय हो..जय हो...
जय हो वैराग्य की जय हो...
जय हो..जय हो..जय हो..जय हो..जय हो...
सर्व संघ त्याग की जय हो...

प्राणो से प्यारा रजोहरण, प्राणो से प्यारा...
तारणहारा रजोहरण, तारणहारा...
प्राणो से प्यारा..(२) तारणहारा...
प्राणो से प्यारा रजोहरण, प्राणो से प्यारा...
तारणहारा रजोहरण, तारणहारा...
रजोहरण मुझे प्राणो से प्यारा..(२)
संयम की तडपन देखो..(२) उछले हर्ष अपारा..(२)
रजोहरण मुझे प्राणो से प्यारा..(२)
{त्याग है महान, वैराग्य भी महान,
त्याग को प्रणाम, वैराग्य को प्रणाम} ..(२)

तर्ज: (कान्हा सो जा ज़रा - बाहुबली 2)

(मेरी अंतर विशुद्धि, कर्मों से विमुक्ति)..(३)
गुरुवर हाथो से पाया रजोहरण,
प्रवचन माता की गोद में है जीवन,
आई खुशियों की स्वर्निम घडी,
आनंद आनंद है, संयम आनंद है..(२)

तन मन में आनंद है छाया,
आनंद आनंद है, संयम आनंद है...
करेमि भंते आज है पाया,
आनंद आनंद है, संयम आनंद है...
आनंद आनंद है, संयम आनंद है,
जिनवर का अनुसरण, मिल ही गया मुझे रजोहरण...
जिनवर का अनुसरण, बन ही गया में आज श्रमण...

तर्ज: (घनन घनन - लगान)

(मुनिवरा मुनिवरा...जय जयघोष मुनिवरा)..(२)
गुरुकृपा बरसी, ज्ञानधारा विकसी,
स्वाध्याय की मस्ती मेंहकी है चेहरे पर,
शक्ति की अल्पता है, गुरु की ऊर्जा है,
प्रमाद शत्रु नहीं रह पाएगा पलभर,
आगम वचन से पुलकित तन मन,
ज्ञान गंगा में स्वरूप का दर्शन,
गुरु बहुमान जहाँ, प्रगटता ज्ञान वहाँ,
सर्मपण जगा, अज्ञान भगा,
है शक्तिपात गुरुका, आतम पर,
आगम तत्त्व के सफल सुखानि, शीतलता अर्पे ज्यु पानी,
ज्ञान विश्व के जो है सिकंदर, है कोई जो पीले समंदर,
मुनि जयघोष है सुंदर...(३)

STAVAN STUTI SAJJHAY
S.S.S.

Mahabhoot Agni Tattva

तर्ज: (जय जय केदारा)

{अंतर में संघ-वात्सल्य, अपार है,
गुरुकृपा से प्रगटे, गुण भंडार है} ..(२)
सूर्य की तेजस्वीता, मुख पर खिली ओजस्वीता,
नैष्ठिक ब्रम्हचर्यता, प्रकांड महागीतार्थता,
आगम से उठती जब शंका, आँख मुंदकर करते समीक्षा,
कलिकाल में सर्वज्ञ की देते परिक्षा,
शास्त्रसपिक्ष पंथ के दाता, श्री संघ के भाग्यविधाता,
ग्लानवृद्ध संयमी की जैसी माता,
शासन शणगारा जयघोषसूरीराया..(४)

तर्ज: (विजयी भव:)

गुरु प्रेमसूरि की स्वप्न सृष्टी, गुरु भुवनभानु की दीर्घ दृष्टी,
जिनशासन के हैं रतन, किया जतन, अनुभव से अपने..(२)
हर रोम रोम से, हर रक्त बूँद से, हर दिल के द्वार से, घोष उठे,
शरणंमम, शरणंमम, सूरि जयघोष शरणंमम...
जन जन में जिनवर आण बसे, गुरु वचन में प्राण बसे,
शत्रु प्रमाद पे सनन सनन, अंगारों की ज्वाला सरे,
हर श्रमण में संयम शुद्धी हो, स्वभाव में समता वृद्धी हो,
कलिकाल में प्रभु महावीर के, सच्चे संतान बने,
जयघोषसूरि के अंतर का स्वप्न साकार बने,
हर रोम रोम से, हर रक्त बूँद से, हर दिल के द्वार से, घोष उठे,
शरणंमम, शरणंमम, सूरि जयघोष शरणंमम...

तर्ज: (वो किसना है)

{वचन में सिद्धि, योग में शुद्धि,
अभिनव ज्ञान से, प्लावितबुद्धि} ..(२)
श्रमणों की सृष्टि, करुणा की दृष्टि,
शुभता की आध्यात्मिक पुष्टि,
गुणरत्नों से भरा है अंत:करण, होऽऽऽ
वीरशासन के सूर्य की जो है किरण,
अंतर के दोषो के रक्षण कर्ता,
संघ शासन की चिन्ता के हर्ता,
वो राजा है, सूरि राजा है, जयघोष महाराजा है...

STAVAN STUTI SAHAY
S.S.S.